सांध्य प्रकाश, भोपाल

- 2 NOV 2015

विकास के नये आयाम

मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने ब्लॉग पर जो कुछ कहा है उसमें न केवल आज के मध्यप्रदेश की तस्वीर झलकती है अपितु यह उम्मीद भी बनती है कि उनके ऊर्जावान नेतृत्व में यह राज्य विकास के नये सोपानों तक अवश्य जायेगा। श्री चौहान ने प्रदेशवासियों को राज्य की विकास यात्रा में सहयोगी बनने का जो आहवान किया है वह उनके इसी संकल्प को रेखांकित करता है कि वे इस राज्य को देश के सर्वाधिक विकसित राज्यों की पंक्ति में ले जाना चाहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्री चौहान ने राज्य की कमान संभालने के साथ ही जिस लगन के साथ कृषि और ढांचागत विकास के लिये कार्य किया उसी की वजह से कभी बीमारू माना जाने वाला मध्यप्रदेश आज देश के सबसे तीव्र गति से विकास करने वाले राज्यों की पंक्ति में आ गया है। एक बार अतीत में झांकें तो मालूम होगा कि मध्यप्रदेश को आज की अवस्था में लाने के लिये श्री चौहान और उनके साथियों ने कितनी मेहनत से काम किया है। वैसे प्राकृतिक रूप से अति संपन्न माने जाने वाले मध्यप्रदेश के समक्ष कुछ समस्याएं तब खड़ी हो गईं जब इसके एक बड़े हिस्से को अलग कर छत्तीसगढ़ राज्य का गठन कर दिया गया। उस समय राज्य के समक्ष बिजली, पानी और खनिजों के निष्पादन की समस्यायें तो सामने आई ही थीं राज्य के सिंचित कृषि क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा भी अलग हो गया था।

श्री चौहान के समक्ष किसानों को सिंचाई के साथ अन्य सुविधायें देना जैसे एक चुनौती बनकर सामने आये थे। उन्होंने उसे पूरी शिद्दत के साथ उठाया और उसी का नतीजा है कि जो मध्यप्रदेश कभी अपनी अन्न संबंधी जरूरतों की पूर्ति के लिये केंद्र पर निर्भर करता था वह आज स्वयं केंद्रीय भंडार में बड़ी मात्रा में अन्न जमा करता है। कृषि के बाद मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा योगदान महिला उन्नयन एवं शिक्षा में है। मध्यप्रदेश ने बेटियों के संरक्षण और संवर्धन के लिये जो योजनायें प्रारंभ की उनको आज देश के दूसरे राज्य भी अपना रहे हैं। वस्तुतः केवल कृषि और सामाजिक विकास ही नहीं अपितु औद्योगिक स्तर पर भी मध्यप्रदेश का खाका बदला है। आज यह राज्य बड़े औद्योगिक निवेशकों को भी आकर्षित कर रहा है और इसके फलस्वरूप राज्य के स्वरूप में बदलाव आता जा रहा है। प्रशासन से लेकर सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में पिछले एक दशक में जो प्रगति हुई है वह इसके पहले कभी नहीं देखी गई थी। सबसे विशेष बात यह है कि श्री चौहान में आज भी इस राज्य को आगे ले जाने की ललक में रंचमात्र भी कमी नहीं आई है और इसीलिये कहा जा सकता है कि उनके नेतृत्व में मध्यप्रदेश निश्चित ही विकास के नये शिखरों तक अवश्य पहुंचेगा।